>

Title: Regarding petition filed against the circulation of "Satyartha Prakash".

प्रो. रासा सिंह रावत (अजमेर): सभापति महोदय, अब मैं एक बहुत ही अहम् मसला सदन में प्रस्तुत करना चाहता हूं। भारत की राजधानी दिल्ली में कतिपय षडयंत्रकारी सांप्रदायिक तत्वों द्वारा कुछ समय पूर्व सामाजिक सौहार्द्रता एवं राष्ट्रीय एकता को ठेस पहुंचाने के लिए, आज से लगभग 125 वर्ष पूर्व स्वराज्य के प्रथम मंत्रद्रष्टा, राष्ट्रीय पुनर्जागरण के पुरोधा एवं सामाजिक क्रांति के अग्रदूत तथा आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा वेद की शिक्षाओं के आधार पर रचित सुप्रसिद्ध सुधारवादी ग्रन्थ

"सत्यार्थप्रकाश" के मुद्रण, प्रकाशन तथा वितरण पर प्रतिबंध लगाने के उद्देश्य से एक याचिका प्रस्तुत की गई है, जिससे देश के लाखों-करोड़ों आर्य समाज के अनुयाइयों में भयंकर रोष एवं आक्रोष व्याप्त है तथा हजारों आर्य साधु, संत, सन्यासीगणों ने जन्तर-मन्तर पर अभी पिछले दिनों धरना देकर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की मांग करते हुए सामाजिक एवं धार्मिक सौहार्द्रता पर जोर दिया है।

सत्यार्थप्रकाश एक वैचारिक क्रांति की मशाल है। इस ग्रंथ में स्वराज्य, स्वदेशभक्ति, स्वाभिमान, राष्ट्रीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना, मानवता, सामाजिक एक्य, महिलाओं को सम्मान देने, अनिवार्य शिक्षा, छूआछूत उन्मूलन, सामाजिक कुरीतियों के उच्छेदन, अंधविश्वासों का निषेध, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, विभिन्न विचारधाराओं का तुलनात्मक अध्ययन, वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत दृष्टिकोण को अपनाकर धार्मिक रूढियों एवं गुरूडम के उन्मूलन आदि की तथ्यपूरक विवेचना की गई है। इस कालजयी पुस्तक ने करोड़ों दिल-दिमागों को रोशन कर धर्म के नाम पर फैले अंधविश्वासों को दूर किया। भारत के सांस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक पुनर्जागरण में इस ग्रंथ का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिस ग्रंथ को पढ़कर हजारों लोग भारत माता को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए जेलों में गये, अंग्रेजों की यातनाएं सहीं, जिस ग्रंथ ने स्वामी श्रद्धानंद, शेरे पंजाब लाला लाजपतराय, सरदार भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल जैसे महान नेता, क्रांतिकारी देश को दिये। जिस ग्रंथ की लाखों प्रतियां देश/विदेश की भाषाओं में छपकर धर्मप्रेमियों की ज्ञान पिपासा बुझा रही है, उस वैचारिक क्रांति के जनक "सत्यार्थप्रकाश" के मुद्रण, प्रकाशन एवं वितरण पर प्रतिबंध लगाने की बात सोचना देश की एकता को नष्ट करना तथा मानवता एवं भारतीय संविधान की मर्यादाओं के विरुद्ध अपराध है।

अतः भारत सरकार से अनुरोध है कि अविलम्ब ऐसे सांप्रदायिक माहौल बिगाड़ने वाले तत्वों की गहन छानबीन कर षडयंत्रों का पर्दाफाश करते हुए उन्हें गिरफ्तार किया जाए तथा करोड़ों लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाली याचिका को निरस्त करवाकर वैचारिक अभिव्यक्ति की रक्षा करते हुए भारत माता के महान सपूत महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की जाए। धन्यवाद।

18.03 hrs.

तत्पश्चात् लोक सभा सोमवार, 28 अप्रैल 2008/8 वैशाख, 1930 (शक)

के 1100 बजे तक के लिए स्थगित हुई।

[r1]ctd by b

Leave three pages for Q. and Answer - 462 [H2]

Fd by c1 [MSOffice3]

Fld by d1.e [r4]

Leave six pages for Q&A [r5]

Fd. By e1 [r6]

cd. by f [R7]

[r8]Cd by G

[KMR9]Cd by h1

cd. by 'j'

[R10]

fd. by k [R11]

CONTD. BY L1.E [R12]

Chidambaram-cd. [MSOffice13]

Ctd by m

[r14]

Contd. By N1 [MSOffice15]

Cotd by q1 [MSOffice16]

[R17](Fd. by r1)

[r18]fld by s

Cd by t1 [MSOffice19]

Fld by u1.e [r20]

Fd. By w1 [m21]

[k22]contd by x1

Cd by z1 [KMR23]

cd. by 'a2' [R24]

Shri Swain cd [R25]

cd. by b2 [R26]

Contd. By c2.e

[MSOffice28]cd. by d2

Contd. By E2 [MSOffice29]

cd. by f2.e [a30]

cd by g2

Cont by h2.h [p32]

Cd by j2

[N33]

Cd by k2 [MSOffice34]

cd. by l2.h [R35]

[k36]contd by m2

cd.. by n2 [r37]

fd by o2 [KMR38]

cd. by p2 [R39]

cd. by q2 [R40]

Contd. By r2.e [R41]

[MSOffice42]cd. by s2

U3cd

[s43]

[r44](Cd. by Shri Mohan Singh)

[r45](Cd. by w2)

cd by x2 [R46]

[R47](Cd. by y2)

Fd. By z2 [H48]

Ctd. By a3 [m49]

cd. by f3 [R50]

Fld by g3.e [R51]

Followed by J3

[a53]Ce. By k3.e

[a54]cd. by l3.e

Cd by l3 [R55]

[R56](Cd. by n3)

cd. by o3 [H57]

Cd by q3 [MSOffice58]

cd. by r3.h

[R59]

cd. by s3 [R60]

cd. by 't3' [R61]

cd. by u3 [R62]

Contd. By w3.e [R63]

[MSOffice64]cd. by x3

(cd. by y3) [b65]

Cd by a4

[b66]

[MSOffice67]cotd by b24

[R68](Cd. by c4)

[r69]manoj ctd

[r70]ctd by d4

Jat [N71]iya cd

Cont by e4.h [p72]

Fd by f4

[N73]

Cd by g4 [MSOffice74]

cd.. by j4 [r75]

Cd by k4 [KMR76]

[R77]cd. by 'l4'

fd. by m4 [R78]

[R79]Contd. By n4.e